डा० महेश झा प्रणीतम्

श्री विश्वनाथ सुप्रभातस्तोत्रम्

(हिन्दी. अनुवादसहितम्)

डा० महेश झा प्रणीतम्

श्री विश्वनाथ सुप्रभातस्तोत्रम्

(हिन्दी अनुवाद सहितम्)

लेखक :

प्रो० महेश झा

एम० ए० (संस्कृत)
नव्य न्यायाचार्यः (लब्ध स्वर्णपदकः) विद्यावारिधिः (पी.एच.डी.)
पूर्वप्राचार्यः अध्यक्षश्च स्नातकोत्तरसंस्कृतविभागः
ति० मॉ० भागलपुर विश्वविद्यालयः भागलपुरम्।

अनुवादक : सम्पादकश्च

श्री विजयकुमार झा

एम०ए० (संस्कृत)
उपायुक्त, व्यापार कर विभाग
मुरादाबाद (उ०प्र०)
सन्- २०१५ ई०

© -सर्वाधिकार लेखकाधीन

संस्करणः- प्रथम

प्रकाशकः-

देवकला झा

भगवती प्रकाशन कलायत्नम्

शास्त्री नगर, मुंगेर (बिहार) ८११२०१

मुद्रकः

एस.एस. इण्डस्ट्रीज

ए-४७, गांधी नगर, मुरादाबाद-२४४००१

मूल्य : रू० ५०/- मात्र

डा० महेश झा प्रणीतम्

श्री विश्वनाथ सुप्रभातस्तोत्रम्

(हिन्दी अनुवाद सहितम्)

लेखक :

प्रो० महेश झा

एम० ए० (संस्कृत)

नव्य न्यायाचार्यः (लब्ध स्वर्णपदकः)

विद्यावारिधिः (पी.एच.डी.)

पूर्वप्राचार्यः अध्यक्षश्च

स्नातकोत्तरसंस्कृतविभागः

ति० मॉ० भागलपुर विश्वविद्यालयः

भागलपुरम्।

भगवतीवासुदेवम्

ग्रा० व पो० पस्टन

भा० अन्धरा ठाढ़ी

जि० मधुवनी (विहार)

अनुवादकक : सम्पादकश्च

श्री विजयकुमार झा

एम०ए० (संस्कृत)

उपायुक्त, व्यापार कर विभाग

मुरादाबाद (उ०प्र०)

सन्- २०१५ ई०

तर्पणम्

स्वर्गंगता भगवती जननी मदीया
स्वर्गंगतो मम पिता ननु वासुदेवः ।
श्रीविश्वनाथशिवपावनसुप्रभात-
स्तोत्राम्बुतर्पणमिदं पितरौ लभेताम् ।।

फाल्गुनपूर्णिमा
वि०सं० २०७१

महेश

सम्पादकीय

श्रीविश्वनाथसुप्रभातस्तोत्रम् प्रो० महेश झा प्रणीत खण्डकाव्य के साथ-साथ आधुनिक शिवभक्ति का मूर्त्तरूप है। मातृका के रूप में ही जब मुझे इसे पढ़ने का अवसर मिला तो मैं इसे पढ़कर बहुत प्रभावित हुआ तथा इसका हिन्दी अनुवाद करने का निश्चय कर लिया। इसके लिए प्रो० झा जी का आदेश प्राप्त कर हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित करायी। अति कार्य व्यस्तता के कारण यह काम धीरे-धीरे सम्पन्न हुआ। अब यह आप पाठकों के समक्ष है। यह अनुवाद तथा सम्पादन कितना सफल हो सका है, इस विषय में आप सहृदय पाठक ही प्रमाण हो सकते हैं। श्री विश्वनाथ महादेव की प्रेरणा से ही यह सम्पन्न हुआ है, इसलिए इसकी स्वीकार्यता अवश्य होगी, यह मेरा विश्वास है।

श्री विश्वनाथ शिव के अनेकानेक स्तोत्र संस्कृत भाषा में पूर्व से ही विदयमान हैं। फिर भी यह एक विलक्षण आस्वाद शिवभक्ति के सम्बन्ध में दे सकेगा, यह आशा है। आजकल सामान्य लोग संस्कृत भाषा के माध्यम से सब बात जान पाने में समर्थ नहीं हो पाते। फिर भी संस्कृत स्तोत्र आदि सुनने में सामान्य जन की भी अभिरुचि तो होती ही है। किन्तु इनमें कही गई बात भी समझी जा सके, इसकी अपेक्षा रह जाती है। इसीलिए मैंने इसका हिन्दी अनुवाद कर देना उचित समझा इस अनुवाद को अनुवाद न कहकर अर्थ या भाव कहना उपयुक्त होगा। इसका उद्देश्य केवल जन-साधारण के लिए इसे बोधगम्य बनाना है। इसलिए जिस प्रकार समझा जा सके, उस तरह का प्रयास किया गया है। साथ ही लेखक की मूल भावना भी अक्षुण्ण रहे यह भी ध्यान रखा गया है।

मैं तो संस्कृत भाषा से एकदम अलग रह कर सरकारी काम-काज का निष्पादन करता रहता हूँ। पूर्व में अध्ययन काल में ही संस्कृत का सम्पर्क था। सेवा काल में तो पूर्णरूप से वह छूट चुका है। फिर भी किसी तरह यह सम्पन्न हो सका है। इस में मेरे गुरुजनों का आशीर्वाद है। अन्त में इस प्रकाशन की समस्त त्रुटियों का उत्तरदायित्व स्वीकार करता हुआ सहृदय पाठक से इस स्तोत्र का रसास्वाद अवश्य करने का निवदेन करता हूँ

श्रीविश्वनाथाय नमः

निवेदक :

दि० ५/३/२०१५ विजय कुमार झा

प्रो० मुनीश्वर झा
महामहोपाध्याय
साहित्याचार्य, एम०ए०, बी०एल०
राष्ट्रपति सम्मानित
डी०लिट् (पेरिस)
डॉ० आफ लॉ (पेरिस)
पूर्व कुलपति का.स.वि. वि० दरभंगा
पूर्व शिक्षा निदेशक पश्चिम बंगाल सरकार

१२, श्रीकुञ्ज
एपार्टमेंट बुद्धा कालोनी
पटना ८००००१
दूरभाषः ०६१२२५२३०३२

अनुशंसा

प्रो० महेश झा जी अपनी सुन्दर संस्कृत-काव्य रचना से निरन्तर सुरभारती की सेवा में लगे रहते हैं। अवकाश ग्रहण के बाद तो झा जी की लेखनी और अधिक प्रखर दिखती है। उसी का यह परिणाम है कि हाल के कुछ दिनों में इनकी कई रचनाएँ देखने को मिली हैं। मैं तो महेश जी की काव्य प्रतिभा को देखकर चकित रह जाता हूँ। इस समय वे सुप्रभात स्त्रोतम् की रचना में लगे हुए हैं। उसी क्रम में श्रीविश्वनाथसुप्रभातस्तोत्रम् प्रकाशित होने जा रहा है।

श्रीविश्वनाथ सुप्रभात स्तोत्रम् संस्कृत की स्तोत्र-काव्य परम्परा की तो अभिवृद्धि करता ही है, साथ ही गंगा प्रदूषण आदि महत्वपूर्ण आधुनिक समस्या को उजागर करता है। यह प्रयास अत्यन्त प्रशंसायोग्य है। इसके लिए महेश जी को मैं हृदय से आशीर्वाद और धन्यवाद देता हूँ। यह सुप्रभात स्तोत्र काव्यकला की दृष्टि से भी उत्कृष्ट है। सुन्दर अलंकार योजना, वस्तु वर्णन का समुचित युक्ति संगत प्रसंग विधा प्रातःकालिक मनोरम प्राकृतिक छटा का जीवन्त दृश्य आदि स्तोत्र को और अधिक सुन्दर बना देता है। शिव-भक्ति तो इसके प्रत्येक पद में भरी हुई प्रतीत होती है। मैं इसकी सफलता के लिए बाबा विश्वनाथ से प्रार्थना करता हूँ। साथ ही महेश जी इसी तरह अपनी नई-नई काव्य-रचना का आस्वाद हम पाठकों को कराते रहें, एतदर्थ भगवान् भोलेनाथ से इनकी दीघार्यु की कामना करता हूँ।

श्री विश्वनाथो विजयते

दि० ५/२/२०१५
(होलिकोत्सव)

निवेदक :
मुनीश्वर झा

प्रो० कमला कान्त मिश्र
एम०ए०, साहित्य
व्याकरण- बौद्ध दर्शनाचार्य
पी.एच.डी., डी.लिट्
पूर्व निदेशक, राष्ट्रिय संस्कृत
संस्थान, नई दिल्ली

१६६, नेहरु एपार्टमेंट
कालका जी
नई दिल्ली ११००१६
दूरभाषः ०११२६४६२७३५

अनुशंसा

प्रो० महेश झा द्वारा रचित श्रीविश्वनाथ सुप्रभात स्तोत्रम् प्राचीन एवं नवीन संस्कृत काव्य परम्परा का समन्वय समुचित ढंग से बैठाकर प्रस्तुत सुन्दर लघु काव्य है। इसमें शिवभक्ति की अभिव्यञ्जना तो पद-पद में होती ही है, साथ-साथ प्राकृतिक सौन्दर्य का मनोरम चित्र खींचा गया है। इस भक्ति-भाव भरित काव्य में भी प्रो० झा जी ने गंगाप्रदूषण आदि अत्याधुनिक समस्या की ओर संकेत कर अपनी नई सोच एवं प्रगतिशील चिन्तन का परिचय दिया है। प्रो० महेश झा जी की कई रचनाओं को देखने का अवसर मुझे मिला है। जिनमें लघु काव्य, अनुवाद, उपदेशात्मक नीतिपरक काव्य, स्तोत्र, ग़ज़ल आदि प्रमुख हैं। आजकल तो वैसे भी लोगों की काव्य आदि पढ़ने की अभिरुचि नहीं देखी जाती, फिर विशाल महाकाव्य आदि तो केवल सुनने और दूर से देखने की वस्तु बन गये हैं। ऐसी स्थिति में इसी तरह के छोटे-छोटे काव्यों के द्वारा सहृदय पाठकों का संस्कृत कविता के प्रति आकर्षण पैदा करना महेश जी की सच्ची संस्कृत सेवा मानी जाएगी। मैं अपनी ओर से प्रो० झा जी को इसके लिए हार्दिक धन्यवाद के साथ-साथ साधुवाद देता हूँ और इस काव्य की सफलता की कामना करता हूँ।

ॐ नमः शिवाय

दि० ८/३/२०१५

विनयावनतः
कमलाकान्त मिश्र

आमुख

अत्यन्त प्राचीन काल से काशी नगरी भारत वर्ष में प्रसिद्धतम धाम के रूप में विख्यात रही है। इसकी प्रसिद्धि का कारण स्वयं काशी नगरी है या यहाँ की उत्तरवाहिनी गंगा है या फिर बाबा विश्वनाथ हैं, इसका निश्चय कर पाना कठिन है। "काशी कँह प्रिय जानि ललकि भेट्यो जगधाई, सपनेहूँ नहि तजी रही अंकम् लिपटाई" भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की इस पंक्ति से ज्ञात होता है कि काशी नगरी स्वयं अत्यन्त पवित्र और मनोरम नगरी मानी गई है, इसी लिए गंगा तथा बाबा विश्वनाथ दोनों को यहाँ आना पड़ा। उत्तर वाहिनी गंगा के पावन जल से सिंचित होकर यहाँ की धरती और अधिक पावन बन जाती है। बाबा विश्वनाथ भी इसी गंगा के कारण यहाँ अवस्थित हैं। यह स्थान पुरा काल से ही संस्कृत विद्या का केन्द्र रहा है। इसलिए देश-विदेश सब जगह से लोग यहाँ आकर ज्ञानार्जन करते रहे हैं। ज्ञान के बिना मुक्ति सम्भव नहीं होती 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' शास्त्रों के इस सुचिन्तित सिद्धान्त को मानकर पुरा काल से ऋषि, महर्षि, मनीषी आदि मोक्षार्थी काशी का सेवन करते रहे हैं। ज्ञान की उपलब्धि यहाँ सुगम है, यह प्राचीन मान्यता है। काशी विश्वनाथ शिव पुराणोक्त ज्योतिर्लिंगों में प्रधान माने गये हैं (वाराणस्यां तु विश्वेशम्) सात मोक्षदायक धामों में भी काशी प्रमुख है (काशी काञ्ची यवन्तिका)।

मैं समझता हूँ कि बाबा विश्वनाथ और उत्तर वाहिनी गंगा दोनों ने मिलकर काशी को पुराकाल से ही विख्यात बना दिया है। इसलिए प्राचीन काल से ही दोनों के स्तोत्र आदि लिखे जाते रहे हैं। पण्डित राज जगन्नाथ की गंगालहरी काशी के प्रसिद्ध गंगाघाट पर बैठकर लिखी गई है। गंगा के घाट पर बैठकर शहनाई बजाते हुए बिसमिल्ला खाँ 'भारत रत्न' विभूषित हुए। कहते हैं कि सन्त कबीर तथा उनके गुरु रामानन्द की भी साधना स्थली काशी की उत्तर वाहिनी गंगा का तट ही था। इस तरह यहाँ की उत्तरवाहिनी गंगा काशी को लोकोत्तर ख्याति दिलानें में

महत्वपूर्ण कारण है। किन्तु आजकल माँ गंगा की स्थिति सब के लिए चिन्ता का विषय हो गई है। इस 'सुप्रभात स्तोत्रम्' में इस पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। इस 'स्तोत्रम्' में 'निर्मलसुप्रभातम्' से गंगा की निर्मलता काम्य है। जिस गंगा के समीप रहकर कबीर, तुलसी आदि अनेक सन्तों ने निर्मल ज्ञान प्राप्त किया, काशी की उसी गंगा की वर्तमान कालिक स्थिति चिन्तनीय बन गई है। इसके उद्धारार्थ श्री विश्वनाथ बाबा की कृपा आवश्यक है। उन्हीं की प्रेरणा से लोगों में सामूहिक प्रयत्न करने की प्रवृत्ति सम्भव है। पुरा काल से ही गंगा लोगों को निष्कलुष करती हुई आज वर्तमान काल के कलुषाधिक्य से स्वयं कलुषित होती जा रही है। इसलिए काशी की पवित्रता को अक्षुण्ण रखने के लिए विश्वनाथ बाबा की कृपा अपेक्षित है। तभी काशी में निर्मल सुप्रभात सम्भव है।

'काशीमरणान्मुक्तिः' यह उक्ति अतिप्राचीन काल से विख्यात है। इसलिए वृद्धावस्था में काशीनिवास का प्राधान्य है। शास्त्रों में 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' यह सिद्धान्त प्रायः सर्वमान्य है। इन दोनों उक्तियों में सामाञ्जस्य करने के लिए यह मानना आवश्यक हो जाता है कि काशी निवास से ज्ञान सुलभ हो जाता है, इसके लिए यहाँ अनेक प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान तो हैं ही, साथ-साथ ज्ञान स्वरूप साक्षात् बाबा विश्वनाथ यहाँ विद्यमान हैं। उस ज्ञान स्वरूप बाबा विश्वनाथ के कृपालोक में आलोकित हो पाना सुगम है। गोस्वामी तुलसी दास जी ने इस शिव की ही 'बन्दे बोधमयं नित्यं गुरुंशंकररूपिणम्' कह कर प्रार्थना की है। वस्तुतः शिव ज्ञानस्वरूप ही हैं। उन की पूजा लिंग रूप में ही होती है। कहीं भी शिव मन्दिर में शिव की मूर्ति की पूजा नहीं होती। पुष्पदन्त ने शिवमहिम्न स्तोत्र में शिव स्वरूप के विषय में कहा है कि शुद्ध ज्ञान स्वरूप शिव किसी के द्वारा स्तुतियोग्य या किसी इन्द्रिय आदि का विषय नहीं हो सकते। इस लिए उनके स्वरूप की अर्वाचीन चन्द्रशेखर आदि रूप में

कल्पना की गई जहाँ लोगों का ध्यान सम्भव हो सके (स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः; पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः)।

अस्तु, ज्ञानस्वरूप बाबा विश्वनाथ के ज्ञानालोक में पावन बनी हुई काशी अपनी गोद में सदियों से लोगों को मुक्ति दिलाती रही है। इस 'सुप्रभात स्तोत्रम् में श्री विश्वनाथ शिव से काशी में उसी पावन सुप्रभात को लाने के लिए प्रार्थना की गई है।

मित्रों ! मैंने ऊपर कुछ बातें कही हैं। हो सकता है मेरे अल्प ज्ञान के कारण इसे कुछ लोग अनर्गल मान लें। मैं अपनी उस धृष्टता के लिए क्षमा चाहता हूँ। इस सुप्रभात स्तोत्रम् में मैंने वस्तुतः श्री विश्वनाथ शिव के प्रति अपनी भक्ति का उद्‌गार ही व्यक्त किया है। मेरे प्रमाद या बुद्धिभ्रम से इसमें कुछ त्रुटि हो गई हो तो विद्वज्जना उसे क्षमा करेंगे।

श्रीविश्वनाथो विजयते

फाल्गुन पूर्णिमा २०७१ — श्रद्धावनतः

महेश झा

श्री विश्वनाथ सुप्रभात स्तोत्रम्

वन्दे विश्वविदव्ययं त्रिनयनं वन्दे विभूतिश्रियं
वन्दे जह्नुसुतान्वितास्वशिरसं वन्दे पिनाकायुधम्।
वन्दे बालशशाङ्कशेखरमुमानाथं प्रसन्नाननम्
वन्दे विश्रुतविश्वनाथमनघं काशीपुराधीश्वरम् ।।१।।

अनुवाद : मैं सबकुछ जानने वाले, अविनाशी तीन आँखों से युक्त शिव को नमस्कार करता हूँ। विभूति या भस्म की शोभा से सम्पन्न शंकर की मैं वन्दना करता हूँ। जिनका अपना मस्तक जाह्नवी से युक्त है या जिनके मस्तक पर गंगा विराजमान है उन्हें मैं प्रणाम करता हूँ। पिनाक नामक धनुष जिनका अस्त्र है उन्हें मैं नमन करता हूँ। द्वितीया तिथि का चन्द्र जिसका मस्तकालंकार है उस उमापति को मैं नमस्कार करता हूँ। जो प्रसन्नमुख हैं, काशी नगर के अधिपति विख्यात पवित्र बाबा विश्वनाथ को मैं प्रणाम करता हूँ।।१।।

हे विश्वनाथ हर तेऽस्तु शुभप्रभातं
वाराणसीश्वर महेश्वर सुप्रभातम्।
शास्त्रानुगुञ्जबहुचर्चितसुप्रभातं
गंगोर्मिगुञ्जितसुमन्दिरसुप्रभातम्।।२।।

अनुवाद : हे विश्वनाथ शिव ! आपका सुशुभ प्रभात हो। हे वाराणसी के स्वामी महादेव! सुप्रभात हो। विविध शास्त्रों के अनुगुञ्ज से आप अतिशय चर्चित होते रहते हैं तथा बगल में बहने वाली गंगा के तरंगों के गुंज से आपका सुन्दर मन्दिर गुञ्जित होता रहता है। आपका सुप्रभात हो ।।२।।

सङ्गीयतेऽमरवर श्रुतिरम्यमुच्चैः
गङ्गोर्मिभिः सततमेव यशस्त्वदीयम्।
वाति प्रभातपवनो विकिरन् दिशासु
तद् विश्वनाथ तव पावनेसुप्रभातम्।।३।।

अनुवाद : हे महादेव! गंगा के तरंगों के द्वारा सदैव आपका यश जोर-जोर से गाया जा रहा है, जो सुनने में मनोहर है, उसे प्रातः कालिक पवन दिशाओं में बिखेर रहा है। हे विश्वनाथ ! आपका पवित्र सुप्रभात हो।।३।।

संवाहनं चरणयोः कुरुतेऽन्नपूर्णा
पूर्वं प्रबुद्ध्य मृदु नम्रमुखी पुरारे।
किं साम्प्रतं न शयनं तदसाम्प्रतं ते ?
हे विश्वनाथ तव मङ्गलसुप्रभातम् ।।४।।

अनुवादः हे त्रिपुरारी ! पहले उठकर झुकी हुई मुखवाली अन्नपूर्णा आपके चरणों को कोमलता के साथ दवा रही है। इस समय आपका सोना अनुचित नहीं है क्या ? अर्थात् इस समय आपका सोना उचित नहीं है। हे विश्वनाथ आपका मंगलमय सुप्रभात हो ।।४।।

पुत्रः स शंकर गणेश इह प्रतीक्षां
पूर्वं प्रबुद्ध्य कुरुते च पुरस्त्वदीयः।
सद्यो हि मङ्गलमुमेश दिशन् दिशासु
विश्वम्भर प्रतर सुन्दरसुप्रभातम् ।।५।।

अनुवाद : हे शंकर! आपका वह पुत्र गणेश यहाँ सामने पहले ही जाग कर आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। हे उमेश! वह सब दिशाओं में मंगल भी सूचित कर रहा है। हे विश्वम्भर! सुन्दर सुप्रभात फैलाओ ।।५।।

वृद्धोक्ष एष तव वाहनरूप ईश
रोमन्थमाशु हि विहाय वितत्य चांगम्।
सन्तिष्ठते प्रकुरुते च हर प्रतीक्षां
कुर्याद्गुतं वृषभकेतन सुप्रभातम्। ।।६।।

अनुवाद : हे ईश्वर! यह बूढ़ा बैल जो तेरा वाहन है पागुर (जुगाली) करना शीघ्र छोड़कर और शरीर फैलाकर खड़ा हो रहा है तथा हे हर! वह आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। हे वृषभकेतन (बैल पर सवारी करने वाले) शीघ्र सुप्रभात करो।।६।।

उन्मील्य देव नयनानि शनैः पुरस्तात्
सम्पश्य शर्व गिरिजामुखदर्पणं च।
नूनं शिव स्वमुखविम्वमुपेहि तत्र
नेत्रत्रयांकितमुमेश्वर सुप्रभातम्।।७।।

अनुवादः हे देव शिव! आँखों को खोलकर धीरे से सामने पार्वती के मुखरूप दर्पण को देखो। हे शिव! वहाँ निश्चय ही अपने मुख का प्रतिविम्ब पाओगे जो तीन आँखों से युक्त है। हे उमेश्वर ! सुप्रभात हो ।।७।।

नैशान्धकार दनुजं प्रबलं निहत्य
तच्छोणितारूणकरो रविरित्यवैमि।
त्वद्दर्शनं हर स वाञ्छति देहि तस्मै
हे विश्वनाथ भगवँस्तव सुप्रभातम्।।८।।

अनुवाद : रात के अन्धकार रूप प्रवल दैत्य को मारकर उसके शोणित से लाल किरण (हाथ) वाले सूर्य हैं ऐसा मैं मानता हूँ। हे हर! वह सूर्य आपका दर्शन चाहते हैं, उन्हें दर्शन दो। हे भगवान् विश्वनाथ! आपका सुप्रभात हो।।८।।

कृत्वाऽवगाहनमुमेश दशाश्वमेध
मुख्येषु गांगसलिलेषु जनाः प्रसन्नाः।
गौरीपते परिहितामलधौतवेशाः
तिष्ठन्ति मन्दिरपुरो हर सुप्रभातम्।।९।।

अनुवाद : हे उमापति ! दशाश्वमेध आदि प्रमुख गंगा घाटों पर स्नानकर प्रसन्न लोग धवल वस्त्र पहने हुए मन्दिर के आगे खड़े हैं। हे गौरीपते शिव! सुप्रभात हो।।९।।

उन्मील्य पङ्कजवनानि भवेश भानुः
तत्कोटरस्थमनुरागमुपेत्य सद्यः।
सम्यग् विभो वितरतीव करैर्दिशासु
त्वत्स्वागताय कुरु निर्मल सुप्रभातम्।।१०।।

अनुवाद : हे भवेश! सूर्य कमल वनों को उद्घाटित कर (खिलाकर) उनके गर्भ देश (भीतर) से अनुराग या लालिमा लेकर सदयः अच्छी तरह आपके स्वागत के लिए करों से (किरणों से) दिशाओं में मानो बाँट रहा है। हे विभु! शीघ्र निर्मल प्रभात करो।।१०।।

गंगाम्भसि स्थिरतया शिरसि प्रजात
शैवालतुल्यसुभगे शिव ते कपर्दे।
दीपीकृतो वरद केन च बालचन्द्रः
हे विश्वनाथ कुरु सुन्दर सुप्रभातम्।।११।।

अनुवाद : हे वरदायक शिव! मस्तक पर आपके जटाजूट के ऊपर गंगा का जल स्थिर रहने के कारण उसमें सेमार (शैवाल) उत्पन्न हो गया हो, ऐसा प्रतीत हो रहा है। उस शैवाल से मनोहर आपके जटाजूट पर बालचन्द्र (द्वितीया का चन्द्र) का दीपक किसने जला दिया है? हे विश्वनाथ! सुन्दर सुप्रभात करो।।११।।

नैशं तमोऽतिमलिनं तव दर्शनाय
सञ्चेष्टमानमिव तद्धि निशामनैषीत्।
लब्ध्वा न ते गलमलं व्यदधात्क्रुधाकिं
हे नीलकण्ठ कुरु पावनसुप्रभातम्।।१२।।

अनुवाद : अति मलिन रात के अन्धकार ने आपके दर्शन के लिए मानो प्रयास करता हुआ रात बिता दी। वह दर्शन न पाकर क्या उसने आपके गले को क्रोध में आकर काला कर दिया है ? हे नीलकण्ठ पवित्र सुप्रभात करो ।।१२।।

दिव्यानि नैजनयनानि निमील्य नाथ
शेषेऽद्य किं प्रमथनाथ निशावशेषे।
जागृष्व हे त्रिभुवनावनजागरूक
सद्यो दयस्व सुजनान् हर सुप्रभातम्।।१३।।

अनुवाद : हे प्रमथाधिप शिव! अपनी दिव्य आँखों को बन्द कर रात के अन्त होने पर भी अभी क्यों सो रहे हो ? हे त्रिभुवन की रक्षा में तत्पर रहने वाले शिव ! जागो, साक्षात् भले लोगों पर दया करो। सुप्रभात हो ।।१३।।

रम्ये कपर्दफलके लसिताऽपि पूर्वं
या ते विभो शशिकला रमणीयकान्तिः।
प्राचीं विलोक्य सहसाऽरुणितां पुरारे
मुञ्चत्यहो श्रियमियं हर सुप्रभातम्।।१४।।

अनुवाद : हे व्यापक शिव ! आपके मनोहर जटाजूट के ऊपर सुन्दर चमक वाला चन्द्रखण्ड पहले (रात के समय) जो शोभित होकर भी पूरव दिशा को लाल देखकर आह! एकाएक यह चन्द्रखण्ड अपनी कान्ति छोड़ रहा है। हे त्रिपुरारि शिव ! सुप्रभात हो ।।१४।।

उन्मील्य दिव्य नयनानि शनैः समन्तात्
सम्पश्य देव दुरितान्यपि सुदृढानि ।
जातानि तानि नयनाग्निशिखाभिराशु
दुग्धानि लम्भय महेश्वर सुप्रभातम्।।१५।।

अनुवाद : हे महादेव! अपनी दिव्य आँखों को खोलकर धीरे-धीरे से देखो। सब ओर दुर्वृत्ति य अमंगल अथवा दुराचार या अशुभ भी सुदृढ हो चुके हैं, उन्हें अपनी आँखों की आग की लपटों से जला डालो। हे महेश्वर ! सुप्रभात हो।।१५।।

उन्मीलिताब्जवनगन्धमुपेत्य सदयो
वाति प्रभातपवनः परितः समग्रम्।
आमोदमुग्धमिह ते शुचिधाम्नि शम्भो
सम्यक् करोति सुगुणं तव सुप्रभातम्।।१६।।

अनुवाद : हे शम्भो ! खिले हुए कमलबन की सुगन्ध सद्यः लेकर प्रातः कालिक पवन बह रहा है। आपके पवित्र धाम में चारों ओर यहाँ सब को सुगन्ध से मुग्ध (प्रफुल्लित) भली भाँति वह (वमन) कर देता है। आपका गुणमय सुप्रभात हो ।।१६।।

गाङ्गीयशीकरचयान प्रवहन् प्रभात-
वायुः सुमन्दगतिरीश विभाति शीतः।
कुर्वन् विभो सुरुचिरां प्रथमां सपर्यां
हे विश्वनाथ तव सुन्दरसुप्रभातम्।।१७।।

अनुवाद : हे व्यापक शिव ! गंगा के जल कणों के संचय को ढोता हुआ प्रातः कालिक पवन अति मन्द गति और शीतल लग रहा है, जो आपकी पहली (प्रातःकालिक) पूजा को अति मनोहर कर रहा है। हे विश्वनाथ ! आपका सुन्दर सुप्रभात हो ।।१७।।

सम्प्राप्तजनपङ्क्तिरतीव दीर्घा
सञ्जायते प्रतिपलं पुनरत्र दीर्घा।
अद्यापि किं पशुपते कुरुषे विलम्बं
जागृष्व चाशु कुरु निर्मलसुप्रभातम्।।१८।।

अनुवाद : हे पशुपति ! (पूजा के लिए) आये हुए भक्त लोगों की कतार बहुत लम्बी है। वह प्रत्येक क्षण यहा और लम्बी हो रही है। अब भी क्यों बिलम्ब कर रहे हो। जाओ और शीघ्र निर्मल सुप्रभात करो ।।१८।।

स्तोस्त्राणिसाधुरचितानि मनोहराणि
श्रौतान्यपि त्रिपुरमर्दन सुप्रियाणि।
गायन्ति भावभरसुस्वरसङ्गतानि
भक्ता गिरीश तव मङ्लसुप्रभातम्।।१९।।

अनुवाद : हे गिरीश ! सुन्दर रचे गये मनोहर स्तोत्र तथा हे त्रिपुरारी! सुन्दर प्रिय वैदिक स्तोत्र भी अतिशयभावपूर्ण सुन्दरस्वर से समन्वित करके भक्तजन गा रहे हैं। आपका मङ्लमय सुप्रभात हो ।।१९।।

त्वद्दर्शनेन लभते नर ईप्सितं स्वं
त्वन्नामकीर्त्तनमपाकुरुते च दैन्यम्।
निर्वाणमत्र तव धाम्नि पुमान् परैति
हे विश्वनाथ सुगुणं तव सुप्रभातम्।।२०।।

अनुवाद : आपके दर्शन से मनुष्य अपना मनोरथ पा लेता है। आपके नाम का कीर्तन दीनता दूर कर देता है। यहाँ आपके धाम में आदमी निर्वाण प्राप्त करता है। हे विश्वनाथ ! आपका सुप्रभात सुन्दर गुणयुक्त हो ।।२०।।

गाङ्गैः पयोभिरभिषेकमुमेश नम्रा
भक्ता विधातुमिह चागतवन्त ईश।
संयोज्य नैजकरयुग्ममुपाह्वयन्ति
हे विश्वनाथ कुरुताच्छुचि सुप्रभातम्।।२१।।

अनुवाद : हे उमापति महादेव ! विनम्र भक्तगण गंगा जल से (आपका) अभिषेक करने के लिए यहाँ आ चुके हैं और अपना दोनों हाथ जोड़ कर पुकार रहे हैं:- हे विश्वनाथ ! पवित्र सुप्रभात करो ।।२१।।

उन्मीलिताब्जमधुगन्धमुपेत्य सद्यो
वाति प्रभातपवनः परितः प्रकामम्।
आमोदमुग्धमसकृत् कुरुते समग्रं
हे विश्वनाथ तव सुन्दर सुप्रभातम्।।२२।।

अनुवाद : विकसित कमल की मधुर सुगन्ध लेकर सद्यः प्रातः कालिक पवन चारो ओर प्रर्याप्त बह रहा है। सब को उस सुगन्ध से बार-बार मुग्ध कर रहा हूँ। हे विश्वनाथ। आपका सुन्दर सुप्रभात है ।।२२।।

सामस्वरेण शुचिना श्रुतिमन्त्रमेष
कश्चिद् यजूँषि समुदीर्यतवाभिषेकम्।
सम्यग् विधातुमधितिष्ठति सम्मुखं ते
हे विश्वनाथ कुरु चाशु शुभप्रभातम्।।२३।।

अनुवाद : पवित्र सामवेद के स्वर में वैदिक मंत्र का उच्चारण कर यह आदमी तथा कोई यजुर्वेद की ऋचाओं का उच्चारण कर ठीक ढंग से आपका अभिषेक करने के लिए आपके सामने खड़ा है। हे विश्वनाथ ! शीघ्र प्रभात करो ।।२३।।

ज्ञानं विना न परमार्थमुपैति कश्चित्
शास्त्रानुचिन्तितमिति प्रथितं निशम्य।
तच्चागता इह जना अतिदूरदेशात्
तेभ्योऽपि देव कुरु निर्मल सुप्रभातम्।।२४।।

अनुवाद : ''ज्ञान के बिना परमार्थ (मोक्ष) कोई नहीं पाता'' शास्त्रों के द्वारा सुचिन्तित यह बात सुनकर उसके लिए (मोक्ष के लिए) बहुत दूर से लोग यहाँ आये हुए हैं। हे देव ! उनके लिए भी निर्मल सुप्रभात करो ।।२४।।

विद्याबलेन मनुजोऽमृतमश्नुते यत्
विद्यानिकेतनविभूषितधाम ते च ।
विद्याधिनाथमुपयान्ति जना भवन्तं
हे विश्वनाथ कुरुताच्छुचिसुप्रभातम्।।२५।।

अनुवाद : विद्या के बल से आदमी अमृत पा लेता है। और आपका धाम अनेक विद्या प्रतिष्ठानों से सुशोभित है। इसलिए लोग सकल विद्या के स्वामी आपके पास पहुँचते हैं। हे विश्वनाथ ! पवित्र सुप्रभात करो ।।२५।।

निर्वाणमत्र लभते मृतिमेत्य जन्तुः
शास्त्रेषु कीर्तितमिदं श्रुतमाप्ततोऽपि।
अद्यापि चैहिकपदं परमं परैति
त्वद्धाम सेवनपरो हर सुप्रभातम्।।२६।।

अनुवाद : ''यहाँ मृत्यु प्राप्त कर प्राणी निर्वाण प्राप्त कर लेता है'' यह बात शास्त्रों में वर्णित है तथा आप्रजन से भी सुनी गई है। आज भी आप के धाम की सेवा में तत्पर जन सर्वोच्च सांसारिक पदवी प्राप्त करता है। हे हर! सुन्दर प्रभात हो ।।२६।।

सान्निध्यमीश तव चाधिकमस्तु येन
गंगाप्रवाह इह मन्दतरः सरन् किम्?
अग्रे गतिं द्रुततरां लभते प्रसन्नः
हे विश्वनाथ भगवंस्तव सुप्रभातम्।।२७।।

अनुवाद : गंगा का प्रवाह, आपकी निकटता अधिक हो सके, इसलिए यहाँ मन्दगति से सरसता हुआ आगे प्रसन्न होकर द्रुततर गति को पा लेता है? हे विश्वनाथ भगवान् ! आपका सुप्रभात हो ।।२७।।

नावस्तरन्त्यु परिगाङ्गजलस्य तत्र
आसीनवेणुनिपुणैरनुगीयमानम् ।
संगीतमीश तव वन्दिसुगीतमेव
जागृष्व देव कुरु सुन्दरसुप्रभातम्।।२८।।

अनुवाद : गंगाजल के ऊपर यहाँ नाव तैरते हैं और उन पर बैठे शहनाई वादन में दक्ष कलाकारों के द्वारा गाया जाता हुआ संगीत, हे ईश्वर ! आपके चारणबन्दी सुन्दर गीत ही है। (इसलिए अब) जागो ! हे देव सुन्दर सुप्रभात करो ।।२८।।

गंगा प्रदुषणमहर्निशमुद्वहन्ती
श्रान्ता गता निजसमुध्दरणं भवन्तम्।
संयाचते त्रिभुवनावनजागरुक
तस्यां द्रुतं हि दयतां शिव सुप्रभातम्।।२६।।

अनुवाद : हे त्रिभुवन की रक्षा में तत्पर शिव ! दिन-रात गन्दगी को ढोती हुई गंगा थक चुकी है और आपसे अपना उद्धार की याचना कर रही है। हे शिव ! उस पर शीघ्र दया करें। आपका सुप्रभात हो ।।२६।।

संयोजना बहुविधा विहिता च नेत्रा
गंगा समुद्धरणकामनया पुरारे।
सिद्धिर्विना तव कृपां सुलभा कथं स्याद्
हे विश्वनाथ कुरु निर्मल सुप्रभातम्।।३०।।

अनुवाद : हे त्रिपुरारि ! नेता के द्वारा गंगा के उद्धार की कामना से अनेक प्रकार की योजना बनाई गई, किन्तु आपकी कृपा के बिना सफलता कैसे सुलभ हो सकती है । हे विश्वनाथ ! निर्मल सुप्रभात करो। ।।३०।।

पापौघमार्जन परा परमाभिवन्द्या
गंगातिपुण्य सलिलाऽपि चिराद् वहन्ती ।
पापानि सर्वजगतामधुनातिखिन्ना
स्तौति प्रभो प्रकुरु निर्मल सुप्रभातम्।।३१।।

अनुवाद : अत्यन्त पवित्र जल बाली गंगा जो परम वन्दनीय है, तथा पापों की ढेर को पखारने में तत्पर है, बहुत दिन से सब लोगों के पापों को ढोती हुई कतिपय थकी हुई प्रार्थना कर रही है, हे प्रभो ! निर्मल सुप्रभात करो ।।३१।।

नीराजनं प्रतिदिनं भव तेऽधिसन्ध्यं
गाङ्गं तदैव तदहो क्रियते च भव्यम्।
गंगासमुद्धरणकर्म्मणि चापि लोकान्
सम्प्रेरय प्रकुरु निर्मल सुप्रभातम्।।३२।।

अनुवाद : हे भव ! (शिव !) प्रतिदिन सन्ध्याकाल आपका नीराजन (आरती) किया जाता है, उसी समय गंगा का भी बड़ा भव्य नीराजन किया जाता है। गंगा के उद्धार के काम में भी लोगों को प्रेरित करो और निर्मल सुप्रभात करो।।३२।।

स्नाताः सुचन्दनविभूषितभालदेशाः
पण्डेत्युपाधय इमे धृतधौतवेशाः।
यज्ञोपवीतवरतन्तु सुशोभिताङ्गा
भ्राम्यन्ति चाशु कुरु देव शुभप्रभातम्।।३३।।

अनुवाद : स्नान किए हुए सुन्दर चन्दन से चमकते ललाट वाले, धुले धोती पहने तथा जनेऊ के पवित्र धागे से सुशोभित ये पण्डा लोग घूम रहे हैं, हे देव ! शीघ्र सुप्रभात करो।।३३।।

केचिद्धनं बहु भवन्तमुमेश केचित्
पुत्रान् सपत्नविजयं पदवीं च केचित्
याचन्त ईश कातचित्वचलां हि भक्तिं
तेभ्यो गिरीश कुरुताच्छुभ सुप्रभातम्।।३४।।

अनुवाद : हे उमेश! कुछ लोग आपसे बहुत धन, कुछ लोग पुत्र, कुछ लोग शत्रुविजय कुछ लोग पद मांगते हैं तथा हे ईश ! कितने तो अचल भक्ति ही मांगते हैं। हे गिरीश ! उन सब के लिए शुभ प्रभात करें।।३४।।

केचिज्जपन्ति तव नाम विभोऽतिमौनम्
उद्घोषयन्ति बहवो बहुधाऽतितारम्।
ध्यायन्ति केऽपि विनयेन च संस्तुवन्ति
हे विश्वनाथ कुरु मंगलसुप्रभातम्।।३५।।

अनुवाद : हे व्यापक शिव ! कुछ लोग आपका नाम अतिशय मोनि धारण कर जपते हैं, बहुत से लोग बहुत प्रकार से जोर-जोर से पुकारते हैं। कुछ लोग विनम्र होकर ध्यान करते हैं और स्तुति करते हैं। हे विश्वनाथ ! मंगलमय सुप्रभात करो ।।३५।।

कर्पूरगौरकुसुमामलविल्वपत्र
माल्याद्यनेकविधमोदकलड्डुकानि।
विश्वेश ते विपणि वीथि सुसज्जितानि
जातानि देव कुरु चाशु शुभप्रभातम्।।३६।।

अनुवाद : हे विश्वेश्वर ! कर्पूर की तरह उजले फूल, स्वच्छ बिल्व पत्र माला आदि अनेक प्रकार (प्रसादार्थ) मिठाई लड्डू आदि आपकी गलियों की दुकानों में सुसज्जित हो चुके हैं। देव ! शीघ्र शुभ प्रभात करो ।।३६।।

रक्त नभो भव विलोक्य पतत्रिजातं
कूजत्करोति तव कीर्तनमित्यवैमि।
श्रुत्वा तदीय कल्यानसुवन्दिगीतं
निद्रां जहीहि कुरु निर्मलसुप्रभातम्।।३७।।

अनुवाद : हे भव (शिव) पक्षिसमूह लाल आकाश को देखकर कूजन करता हुआ आपका कीर्तन कर रहा है, वह मैं समझता हूँ। उसके मधुर अव्यक्त गीत रूप सुन्दर वन्दिगीत सुनकर नींद तोड़ो और निर्मल सुप्रभात करो ।।३७।।

उन्मील्य दिव्यनयनानि पुरःप्रपश्य
प्रत्युद्गतारूणपुरस्सरभानुमन्तम् ।
रक्ताब्जहस्तमिव तेऽर्चनतत्परं तं
विज्ञाय देव कुरु पावन सुप्रभातम् ।।३८।।

अनुवाद : हे देवः (अपनी) दिव्य आँखों को खोलकर सामने अरूण (लाल) सारथि को आगे करके उपस्थित सूर्य को देखो जो लाल कमल को हाथ में लिए हुए आपकी पूजा के लिए तत्पर जैसे लग रहे हैं। उन्हें (सूर्य को) ऐसा समझकर पवित्र सुप्रभात करते ।।३८।।

भक्ता विभो भसितभूषितभालदेशा
रुदाक्षमाल्यलसितस्वगलप्रदेशाः।
संयोज्यनैजकरयुग्ममुदीरयन्ति
हे विश्वनाथ तव पावन सुप्रभातम्।।३६।।

अनुवाद : हे व्यापक शिव! भस्म से सुशोभित ललाट, रूद्राक्ष माला से भूषित कण्ठ भक्तगण अपने दोनों हाथ जोड़कर पुकार रहे हैं। हे विश्वनाथ ! आपका पवित्र सुप्रभात हो ।।३६।।

गायन्त्यमी द्विजगणाः श्रुतिरम्यमीश
स्तोत्रं त्वदीयगुणगौरवशंसि सद्यः
येन प्रभात परिपूजनमाशुतोष
भव्यं भवेद् भव तवास्तु शुभप्रभातम्।।४०।।

अनुवाद : हे ईश्वर! ये द्विजगण सुनने में मधुर, आपके गुणगौरव की प्रशंसा से युक्त स्तोत्र सद्यः गा रहे हैं, हे आशुतोष शिव ! जिससे प्रातः कालिक पूजन मनोरम हो, आपका शुभ प्रभात हो ।।४०।।

विश्वेश विश्वमिदमद्य तवाधिपत्यं
विस्मृत्य नैजकलुषाचरणेन मुग्धम्।
ज्ञानं हि नैजमधिकं मनुते परस्मात्
तस्मै गिरीश कुरु निर्मलसुप्रभातम्।।४१।।

अनुवाद : हे विश्वेश्वर ! यह संसार आपका साम्राज्य है यह भूलकर जो आजकल अपने कुत्सित कर्म से चकित या मदान्ध है, अपना ज्ञान दूसरे से अधिक मानता है। हे गिरीश ! उसके लिए निर्मल सुप्रभात करो ।।४१।।

ध्वान्तं प्रभूतमभितो विततं पुरारे
सम्यक् पथा गतिमपास्य कुवर्त्म सर्वः।
गृह्णातिगम्यमधिगच्छति नो कथंचित्
तस्मै प्रभो प्रकुरु निर्मलसुप्रभातम्।।४२।।

अनुवाद : हे त्रिपुरारि ! सब तरफ काफी अन्धकार फैला हुआ है। सब सही रास्ते से चलना छोड़कर गलत मार्ग पकड़ रहा है और किसी तरह अपने गन्तव्य को नहीं जाता। हे प्रभो ! उसके लिए निर्मल सुप्रभात करो ।।४२।।

त्वद्धाम दृष्टिममलामुचितां ददाति
त्वद्धाम दर्शनगभीरधियं ददाति।
त्वद्धाम काममखिलं विमलं ददाति।
धाम्नामधीश्वर विधेहि शुभप्रभातम्।।४३।।

अनुवाद : आपका प्रकाश निर्मल और यथार्थ दृष्टि प्रदान करता है। आपका तेज दर्शनशास्त्र का गम्भीर ज्ञान देता है। आपका प्रकाश समस्त स्वच्छ काम (इच्छा) पूरा करता है। हे समस्त प्रकाश के स्वामी शुभ प्रभात करो ।।४३।।

विश्वं विसारि तव धाम सदा समन्ताद्
आदाय भास्वदवभाति हि विश्वनाथ।
दम्भान्धकारकलुषं तदिति त्रिनेत्र
तस्मा उपानय सु निर्मल सुप्रभातम्।।४४।।

अनुवाद : हे विश्वनाथ ! संसार सब ओर सतत फैले हुए आपके प्रकाश को लेकर प्रकाशवान प्रतीत होता है। किन्तु यह संसार अहंकाररूप अन्धकार से कलुषित हो गया है। हे विनयन शिव! इसके लिये सुन्दर निर्मल सत्प्रभात ले आओ ।।४४।।

उग्रं न सौम्यमुपनीय निजं तृतीयम्
उन्मील्य नेत्रमधुना वितर प्रकामम्।
नव्यंप्रकाशमभितो दयया दयालो
वाराणसीपुरपते कुरु सुप्रभातम्।।४५।।

अनुवाद : अपनी तीसरी आँख को उग्र नहीं सौम्य बनाकर खोलिए और इस समय, हे दयालु शिव! कृपाकर नये प्रकाश पर्याप्त मात्रा में सब ओर फैला दें। हे वाराणसी के स्वामी शिव! सुप्रभात करें ।।४५।।

बुध्यस्व बुद्धिविदितेश भवेश एष
लोकः प्रतीक्षत उमेश तदेव धाम।
आलोकितं भवतु येन समग्रमत्र
काशीश्वर प्रकुरु निर्मल सुप्रभातम्।।४६।।

अनुवाद : जिससे यहाँ समग्र विश्व आलोकित हो सके, हे बुद्धि से ज्ञात होने वाले उमापति शिव! यह संसार उसी तेज (प्रकाश) की प्रतीक्षा कर रहा है। हे काशी के अधिपति हर! निर्मल सुप्रभात करो ।।४६।।

द्वारं पिधाय हर गाढमिहाद्य शेषे
द्वारिस्थितान् च समुपेक्ष्य निजान् हि भक्तान्।
दैन्यान्धकारपतितान् परिदूयमानान्
शीघ्रं समुध्दर समानय सुप्रभातम्।।४७।।

अनुवाद : हे हर! द्वार बन्दकर यहाँ आज गाढ़ी नींद में सो रहे हैं, द्वार पर उपस्थित अपने भक्तों की अपेक्षा कर के जो दीनता के अन्धकार में पीड़ित हो रहे हैं, उन्हें शीघ्र उद्धार करो और (उसके लिए) सुप्रभात ले आओ ।।४७।।

जागर्षि देव गिरिशोऽपि सदा पुरारे
दीनोऽपि दानमखिलाय ददासि नित्यम्।
उग्रोऽपि रुद्र करुणावरुणालयोऽसि
बालेन्दुशेखर कुरुष्व शुभप्रभातम्।।४८।।

अनुवाद : हे त्रिपुरारी देव! पर्वत पर सोते हुए भी आप सतत् जागते होते हैं। स्वयं दीन होकर भी हमेशा सबको दान देते हैं। हे रुद्र ! उग्र होकर भी आप करूणा के सागर हैं। हे बालचन्द्रशेखर शिव ! शुभप्रभात करें ।।४८।।

विश्वेश विश्वविदुमेशगिरीशशम्भो
गङ्गाधराभरवरेश्वर रम्यमूर्त्ते
नागेन्द्रहारहररम्यकपर्ददेव
वाराणसीश कुरु निर्मल सुप्रभातम्।।४९।।

अनुवाद : हे विश्वेश्वर ! सर्वज्ञ उमापति ! गिरीश ! मनोहराकृति ! गंगाधर ! महादेव ! ईश्वर ! रम्यजटाजूटधारी देव ! वाराणसी के स्वामी! निर्मल सुप्रभात करो।।४९।।

श्रीविश्वनाथशुभपावनसुप्रभात
यो नित्यमेव मनसा पठति प्रभाते ।
भक्तया शृणोति च समीप्सित माशु तस्मै
दद्यात्सुभक्तिमपि साम्बशिवः प्रसन्न।।५०।।

अनुवाद : श्री विश्वनाथ शिव का शुभ और पवित्र सुप्रभात स्तोत्र जो सदा ही मन से प्रातः पढ़ता है और भक्ति पूर्वक सुनता है शीघ्र प्रसन्न अन्नपूर्णा के साथ शिव जी सकल मनोरथ प्रदान करें और सुन्दर भक्ति भी दें।

भव तव गुणलेशस्पर्शपूतैर्वचोभिः
दुरितहरनदक्षैर्जाह्नवीवारितुल्यैः।
कुटिलकलुषितं स्वं क्षालये विश्वनाथ
इति वचनसपर्यां स्वीकुरुष्वाशुतोष ।।५१।।

अनुवाद : हे विश्वनाथ शिव । आपके गुण के लेशमात्र के स्पर्श से पवित्र (अत एव) गंगाजल के समान पाप या अमंगल दूर करने में समर्थ (स्तोत्र रूप) वचनों से कुटिल और कलुषित अपने आपको मैं धो रहा हूँ। हे आशुतोष ! इस वाणी रूप पूजा को स्वीकार करो ।।५१।।

जगदम्बा विशालाक्षी प्रहरी कालभैरवः।
उभाभ्यां सहितो देवो विश्वनाथः प्रसीदतु ।।
श्री विश्वनाथार्पणमस्तु

लेखक परिचय

डॉ. महेश झा का जन्म 4 फरवरी 1946 ई० में ग्राम पोस्ट पस्टन भाया गनौली जिला मधुबनी, बिहार में हुआ। इनकी माता का नाम श्रीमती भगवती देवी व पिता का नाम श्री वासुदेव झा था। श्री झा जी छात्र जीवन से ही अध्यवसायी रहे हैं तथा कविता व पद्य की रचना करना प्रारंभ कर दिए थे। अपनी मेधा के कारण 1985 में रीडर, 1990 में प्रोफेसर व 2003 में विभागाध्यक्ष बने। 28/02/2006 को भागलपुर विश्वविद्यालय से संस्कृत के विभागाध्यक्ष के पद से सेवानिवृत हुए। श्रीमती देवकला झा द्वारा जीवनसंगिनी के रूप में श्री झा जी का प्रायः उत्साहवर्धन किया जाता रहा जिसके परिणामस्वरूप सुललित पद्यावली का निरंतर सृजन होता रहा। मातास्वरूपा श्रीमती देवकला झा का छाया चित्र अंकित करना उचित समझता हूँ। श्री झा जी के द्वारा विभिन्न पुस्तक व सुमधुर पद्यावलियों से युक्त ग्रन्थ की रचना की गयी। उनमें चण्डिकाशतकम्, सपर्याशतकम्, आर्याशतकम, जाह्नवीस्तोत्रम्, संस्कृतगज़लम्, वसन्तशतकम्, मैथिलीगीता, कुरानपुराणं, गीतापद्यानुवाद, मुक्तेश्वरसुप्रभातस्तोत्रम, सुप्रभातस्तोत्रम, मदनेश्वरसुप्रभातस्तोत्रम्, चण्डेश्वरसुप्रभातस्तोत्रम, चण्डिकासुप्रभातस्तोत्रम्, श्रीवैद्यनाथसुप्रभातस्तोत्र, श्रीविश्वनाथसुप्रभातस्तोत्र तथा गलज्जलिकाशतकम प्रमुख हैं। सम्प्रति भी लेखक की लेखनी माँ सरस्वती की वंदना में कार्यशील है।

–विजय कुमार झा